International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 21-01-2019; Accepted: 23-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 63-65

अनूपपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

सोना सिंह[1], डॉ० जय सिंह[2]
[1] शोध छात्रा शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.20 है तथा मानक विचलन 8.93 है व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.00 है तथा मानक विचलन 8.49 है। 198 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.65 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
शोध क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.50 है तथा मानक विचलन 8.53 है एवं शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.10 है तथा मानक विचलन 9.60 है। 198 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0. 05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –1.25 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : अनूपपुर जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, अनुसूचित जनजाति, विद्यार्थी, अधिगम स्तर।

1. प्रस्तावना
मानवता के विकास के लिए व्यक्ति को शिक्षित होना परम आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर विश्व में शिक्षा को मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता में शामिल किया गया है। सभी देशों ने अपने यहाँ के संविधान में समानता के स्थान पर व्यक्ति को शिक्षित करने के लिए संकल्प पारित करने के लिए उस दिशा में कार्य करना प्रारंभ किया।
प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण को करने के पश्चात् भारत शासन के मानव संसाधन मंत्रालय ने 'सर्वशिक्षा अभियान' के अन्तर्गत उच्च प्राथमिक स्तर तक की अर्थात सकल प्रारंभिक स्तर (कक्षा 1 से कक्षा 8 तक) शिक्षा से 6 से 14 वर्ष की आयु वर्ग में बालक–बालिकाओं को जोड़ने का निश्चय किया इस कार्य की पूर्ति हेतु सन् 2010 को लक्ष्य बनाया गया था। सर्व शिक्षा अभियान पूर्व में चलाये गये प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण कार्यक्रम का एक परिमार्जित तथा उन्नत स्वरूप है। इस अभियान के अन्तर्गत प्रारंभिक शिक्षा के शैक्षिक सूचक निर्धारित किये गये है। इसमे जहाँ एक ओर सकल नामांकन, न्यूनतम शाला त्यागी दर तथा न्यूनतम अधिगम स्तर को सुनिश्चित करना निर्धारित किया गया है वहीं दूसरी ओर प्रोत्साहन योजनाओं की समीक्षा, विद्यालयीन भौतिक संसाधन एवं उसके उपयोग, शालाओं के विभिन्न कार्यक्रम हेतु धन का आवंटन, ग्राम शिक्षा समिति, शाला प्रबन्धन समिति (शिक्षक–पालक संघ) इत्यादि की समीक्षा भी शामिल की गई हैं दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि इस कार्यक्रम में बहुआयामी ऐसे प्रयास किये जाने का प्रावधान है जो शिक्षा की सही अर्थो में उपलब्धता प्रारंभिक स्तरों पर सुनिश्चित कर सकें।
शहडोल संभाग का अनूपपुर जिला आदिवासी प्रधान जिला है, जो शैक्षिक दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत पिछड़ा जिला है। विशेषकर अनुसूचित जनजाति की विद्यार्थियों में शैक्षिक स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। यहाँ पर प्रारंभिक शिक्षा की सफलता के लिए किये जा रहे सभी प्रयासो तथा उक्त सम्बर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक स्थिति के सुधार के लिए वास्तविक स्थिति का अध्ययन तथा उसमें वांछित सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शैक्षिक शोध करने की आवश्यकता है। उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध समस्या का चयन किया है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल अनूपपुर जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेष के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर हेतु शासकीय प्रयासों व प्रभावों का आकंलन किया गया है। वर्तमान में शासन के समक्ष शिक्षा को जन–जन तक पहुँचाना एक मुख्य उद्देश्य है, लेकिन यह कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। इसलिये शैक्षिक क्षेत्र में ऐसे अनुसंधानों एवं नवाचारों की आवश्यकता है, जो शिक्षा के समग्र विकास तथा स्वयं व राष्ट्र निर्माण हेतु उपयोगिता को सुनिश्चित कर सके।

3. शोध की परिकल्पनायें
प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–
1. शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

- अनूपपुर जिला के प्रारंभिक शिक्षा की सकल स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
- शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग की शैक्षिक स्थिति ज्ञात करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन :

5.1 भौगोलिक परिसीमन – प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला अनूपपुर है। इसके अन्तर्गत 4 विकासखण्ड – अनूपपुर, पुष्परागढ़, जैतहरी व कोतमा है।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमन – अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर (प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक), जनशिक्षा केन्द्र, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले शिक्षा अधिकार अधिनियम सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि: प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधि: शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक शिक्षा स्तर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित प्रारंभिक स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि: प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। प्रारंभिक स्तर (प्राथमिक व माध्यमिक) विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी विकासखण्डों से 10–10 विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है, जिसमें अनुसूचित जनजाति वर्ग के 200 विद्यार्थियों का अधिगम स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के अधिगम स्तर की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – सिंह, ममता (2007)[1], प्रसाद, गोमती (2009)[2], पाठक, पी.डी. (2007)[3], श्रीवास्तव, डी.एस. (2006)[4], पाण्डेय, रामशकल (2007)[5], वर्मा एवं डॉ. जग प्रसाद (2016)[6]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश अनुपपुर जिला 15 अगस्त 2003 को नया जिला बना हैं। सम्पूर्ण विश्व के मानचित्र पर इस जिले की स्थिति 22°07′ से 23°25′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°10′ से 82°10′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक – 01: "शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 1: शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर का आयोजन का अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		100	100
मध्यमान (M)		58.20	59.00
मानक विचलन (SD)		8.93	8.49
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–0.65	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (100-1) + (100-1) = 99+99 = 198

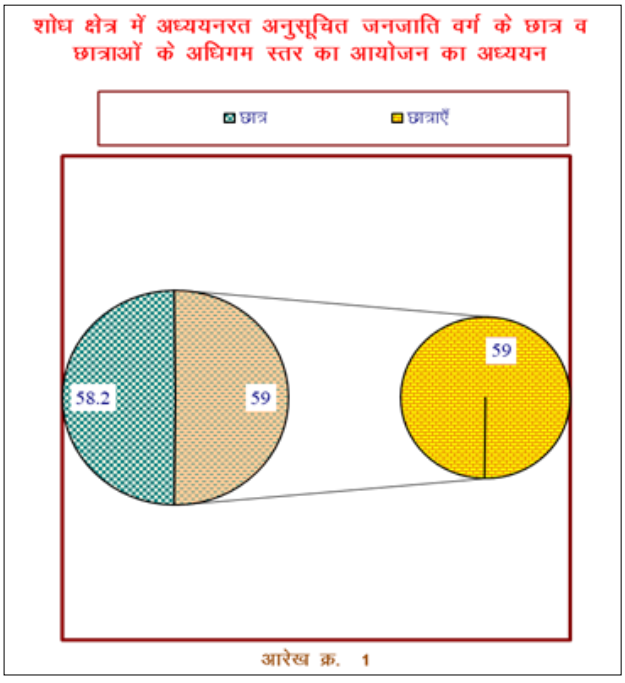

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों के अधिगम स्तर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58. 20 है तथा मानक विचलन 8.93 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्राओं के अधिगम स्तर के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.00 है तथा मानक विचलन 8.49 है।

198 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.65 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांकः 02 "शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर का अध्ययन

समूह		ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के छात्र व छात्राएँ	शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के छात्र व छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		100	100
मध्यमान (M)		57.50	59.10
मानक विचलन (SD)		8.53	9.60
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–1.25	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (100-1) + (100-1) = 99+99 = 198

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.50 है तथा मानक विचलन 8.53 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र में शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.10 है तथा मानक विचलन 9.60 है।

198 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –1.25 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैः

- शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.20 है तथा मानक विचलन 8.93 है व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.00 है तथा मानक विचलन 8.49 है। 198 क ि पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान –0.65 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- शोध क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.50 है तथा मानक विचलन 8.53 है एवं शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.10 है तथा मानक विचलन 9.60 है। 198 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –1.25 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र व छात्राओं के अधिगम स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. संदर्भ

1. सिंह, ममता, प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन, Researches and Studies. 2007: 58:85.
2. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा.
3. पाठक, पी.डी. (2007), भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं इक्कीसवां संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
4. श्रीवास्तव, डी.एस. (2006), भारत में शिक्षा का विकास, द्वितीय संस्करण, साहित्य प्रकाशन, आगरा.
5. पाण्डेय, रामशकल (2007), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, चतुर्थ संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.
6. वर्मा, डॉ. जग प्रसाद सिंगरौली जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर आदिवासी शिक्षा के विकास का समीक्षात्क v/;;u, International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016य 1(2):01-04.